met the concerned South-Central Railway officials, this fact was brought to their notice. Still no action was taken by the South-Central Railways authorities.

The Press clippings indicate the persons involved in getting the contracts on a priority treatment and the audit objection to it. It is a glaring example mentioned in the Press that in the Londa Road-Kottur section of the South-Central Railway, ballast work was assigned at Rs. 350 per cubic metre which is very high compared to a similar work executed previously at Hospet at Rs. 168/- per cubic metre. This kind of high rate was offered even at places where no such work was needed. Some qualified contractors were kept away from these works. I charge the South-Central Railway with favouritism and corruption.

The audit reports also objected to the way the South-Central Railway was offering works to a few, selected contractors with more margins and accepting the losses. Avoiding the open tender system and deviating from the Indian engineering law by the South-Central Railway need to be probed by the C.B.I.

Thank you very much, Madam. ...*(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: It was his maiden speech. So he did not know what should be discussed in the House. Next time he will know it.

SHRI S. JAIPAL REDDY: (Andhra Pradesh): Madam, all the same, he has raised a very relevant and important matter.

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार): मैडम, एसोसिएशन करने की इजाज़त तो दीजिए।

उपसभापति: नहीं, नहीं। आपने टेंडर नहीं दिया उसका। आप पहले टेंडर सबमिट करिए ऐसोसिएशन करने का तब मैं आपको ऐलाऊ करुंगी।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam Mr. Mohan Babu, though it is his maiden intervention has made a very important point about the illegal railway contracts.

RE: REPORTED THREAT TO LIFE OF FILM ACTRESS, MISS MANISHA KOIRALA AND BOMB ATTACK ON FILM DIRECTOR, SHRI MANI RATNAM

श्री सैयद सिब्ते रज़ी (उत्तर प्रदेश): मैडम, आपकी अनुमति से मैं सदन का ध्यान इस वक्त बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे की तरफ दिलाना चाहूंगा। आज हमारी फिल्मों के अंदर जिस तरह से हिंसा और सेक्स का प्रदर्शन हो रहा है, उससे हमारा हर परिवार, देश का पूरा समाज जो है, वह किसी न किसी तरह से प्रभावित हो रहा है। फिल्मों में हिंसा हो रही है, उसके बारे में हम लोग रोज़ यहां सवाल उठाते हैं और जब भी मौका होता है, उस पर हम चर्चा करते हैं लेकिन दुख की बात है कि जब आज हिंसा करने वाले चाहे वे सामाजिक तत्व हों या किसी और तरह के माफिया गिरोह के लोग हो, उनके खिलाफ जब कोई फिल्म बनाई जाती है तो फिल्म बनाने के जो प्रोड्यूसर और डायरेक्टर हैं, उन के ऊपर जानलेवा हमले होते हैं। मैं सदन का ध्यान मणिरत्नम जिन्होंने अभी "बॉम्बे" फिल्म बनाई है जिसके अंदर साम्प्रदायिक सौहार्द के बारे में बहुत ज्यादा ध्यान दिया गया है, उन पर कुछ दिन पहले मद्रास बम के ज़रिए हमला किया गया और उनकी जान लेने की कोशिश की गई। खुशी की बात है कि उनकी जान बच गई लेकिन वे उसमें काफी बुरी तरह से घायल भी हुए।

मैडम, आप जानती हैं कि सिनेमा का योगदान हमारे सामाजिक जीवन में बहुत ज्यादा है लेकिन इस तरह से जिस तरह से हिंसा फिल्मों के अंदर बढ़ती जा रही है, वह भी कोई बहुत अच्छी बात नहीं है। जो अभी मणि-रत्नम जी के ऊपर हुआ है, वह काफी निन्दनीय है और मैं उसकी भर्त्सना करता हूं लेकिन उसी के साथ-साथ फिल्मों के अंदर सेन्सेशन और ज़ज्बाती कैफियत, हैजानी कैफियत पैदा करके फिल्म चलाने का जो एक ट्रेंड पैदा हुआ है, उसके ऊपर भी मैं अपनी आलोचना प्रकट करना चाहता हूं कि अभी कुछ दिन पहले आप जानती हैं, कि मनीषा कोइराला जो एक अच्छी एक्ट्रेस हैं, उन पर भी जानलेवा हमला करनी की धमकी दी गई थी लेकिन किस तरह से उनका व्यापारीकरण किया गया है उस धमकी से फायदा उठाने के सिलसिले में कि एक अखबार के अंदर एक फिल्म का जिस तरह से एक ऐडवर्टाइजमेंट प्रकाशित किया गया है, वह बहुत ही आपत्तिजनक है और मनीषा कोइराला जो कि एक बहुत

ही प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं, उनके मर जाने की खबर से पूरे देश के अंदर एक सेन्सेशनल फैली। और मेरा कहना यह है, मैं कोई पब्लिसिटी नहीं दे रहा हूं कोर्ट ने भी उसकी तरफ तवज्जो दी है। मैं कहना चाहूंगा कि आज हमारे जो फिल्म निर्माता हैं, जो डिस्ट्रीब्यूटर हैं, उन्हें उनकी सामाजिक जिम्मेदारी को निभाना चाहिए। आज जिस प्रकार से एडवरटिज़मेंट किये जाते हैं, उसके कारण देश में कोई भी दुर्घटना हो सकती है। आज समाज को एक नेतृत्व की जरूरत है। मैं समझता हूं कि कलाकार और फिल्म की संस्कृति समाज को एक अच्छा नेतृत्व दे सकते हैं। इस बारे में मैं सदन के माध्यम से और आपके माध्यम से अपील करना चाहूंगा कि उन ताकतों के खिलाफ जो राज्य सरकारें हैं, उन्हें जो ऐक्शन लेना है, वह तो लेंगी ही, लेकिन खुद ही फिल्म के निर्माताओं और डिस्ट्रीब्यूटर्स जो अपनी आचार-संहिता को बनाना चाहिए और उनकी एडवरटिज़मेंट की वजह से देश में कोई ऐसी दुर्घटना न हो जाए, उसकी तरह उन्हें खुद ही ध्यान देना चाहिए। मैं समझता हूं कि यदि संयम से काम किया जाए तभी इस देश को हम सब मिलकर उबार सकते हैं और आज जो हिंसा की प्रवृत्ति पैदा हो रही है, जिसकी वजह से हमारा सामाजिक स्तर गिर रहा है, उसको रोकने की आवश्यकता है। उसके लिए हमें खुद ही अपने दिल में झांककर और सही आचार-संहिता को बनाकर फिल्म के निर्माताओं को आगे बढ़ना चाहिए।

†

†[]सैयद सबत रज़ी "(तिरुपति)": मैडम आपकी अनुमति से मैं सदन का ध्यान अत्यंत ही महत्वपूर्ण मुद्दे की तरफ दिलाना चाहता हूं। आज हमारी फिल्मों के अंदर जिस तरह से हिंसा और सेक्स का प्रदर्शन हो रहा है, उससे हमारा पूरा देश का पूरा समाज दूषित हो रहा है। वह किसी न किसी तरह से प्रभावित हो रहा है। फिल्मों में हिंसा हो रही है। इसके बारे में हम लोग दिन-रात यहां सवाल उठाते हैं और जब भी मौका होता है इस पर हम चर्चा करते हैं लेकिन दुख की बात है कि जब आज हिंसा करने वाले चाहे वह समाज के तत्व हों या किसी और तरह के माफिया ग्रुप के लोग हों। इनके खिलाफ जब कोई फिल्म बनाई जाती है तो फिल्म बनाने के जो प्रोड्यूसर और डायरेक्टर हैं। इनके ऊपर जानलेवा हमले होते हैं। मैं सदन का ध्यान "मणि रत्नम" जिन्होंने अभी "बाम्बे" फिल्म बनाई है जिसके अंदर साम्प्रदायिक सद्भाव के बारे में बहुत ज्यादा ध्यान दिया गया है। उन पर कुछ दिन पहले मद्रास में बम के जरिये हमला किया गया और उनकी जान लेने की कोशिश की गई। खुशी की बात है कि उनकी जान बच गई लेकिन वह इसमें काफी बुरी तरह से घायल भी हुए।

मैडम आप जानती हैं कि सिनेमा का योगदान हमारे सामाजिक जीवन में बहुत ज्यादा है लेकिन इस तरह से जिस तरह से हिंसा फिल्मों के अंदर बढ़ती जा रही है, वह भी कोई अच्छी बात नहीं है। जो अभी मणि रत्नम जी पर हमला हुआ है, वह काफी निंदनीय है और मैं इसकी भर्त्सना करता हूं लेकिन इसके साथ साथ फिल्मों के अंदर सेंसेशन और जज्बाती कैफियत, हैजानी कैफियत पैदा करके फिल्म चलाने का जो एक ट्रेंड पैदा हुआ है, इसके ऊपर भी मैं अपनी सोच पर कट करना चाहता हूं कि अभी कुछ दिन पहले आप जानती हैं कि मनीषा कोइराला जो एक अच्छी एक्ट्रेस हैं, इन पर भी जानलेवा हमला करने की धमकी दी

†[]Transliteration in Arabic Script.

گئی تھی لیکن کس لمحے سے اسکا دوپاپار یکن کیا گیا ہے - اس دھمکی سے فائدہ اٹھانے کے سلسلہ میں کہ ایک اخبار نے اندر ایک فلم کا جس طرح سے ایک ایڈورٹائزمنٹ پر کاشت کیا گیا ہے - وہ بہت ہی آپتی جنک ہے اور منیشیا کو ٹیرالاجو کہ ایک بہت ہی پرسدھ ایکٹری ہیں - انکے مرجانے کی خبر سے پورے دیش کے اندر ایک سینسیشنل پھیل - اور میرا کہنا یہ ہے کہ میں کسی پبلسٹی نہیں دے رہا ہوں کورٹ نے بھی اس کی طرف توجہ دی ہے - میں کہنا چاہونگا کہ آج ہمارے جو فلم نرماتا ہیں - جو مشری بیوکریسی انہیں انکی سماجک ذمہ داری کو سمجھانا چاہیئے - آج جس پرکار سے ایڈورٹائزمنٹ کئے جاتے ہیں - اسکے کارن دیش میں کوئی بھی درگھٹنا ہو سکتی ہے - آج سماج کو ایک نیتو کی ضرورت ہے - میں سمجھتا ہوں کہ کلاکار اور فلم کی سنسکرتی سماج کو ایک اچھا نیتر تو دے سکتے ہیں - اس بارے میں سدن کے مادھیم سے اپیل کرنا چاہونگا کہ ان طاقتوں کے خلاف جو راجنیہ سرکاریں ہیں - انہیں جو ایکشن لینا ہے - وہ تو لینگی ہی - لیکن خود ہی فلم کے نرماتاؤں کو اور مشری بیوکریسی کو اپنی آچار سنہتا کو بنانا چاہیئے - اور انکی ایڈورٹائزمنٹ کی وجہ سے دیش میں کوئی ایسی درگھٹنا نہ ہو جائے - اسکی طرف انہیں خود ہی دھیان دینا چاہیئے - میں سمجھتا ہوں کہ بدی سنیم سے کام لیا جائے تبھی اس دیش کو ہم سب ملکر بچا سکتے ہیں - اور آج جو ھنسا کی پرورتی پیدا ہو رہی ہے - جس کی وجہ سے ہمارا سماجک استر گر رہا ہے - اسکو روکنے کی آوشیکتا ہے اس کے لئے ہمیں خود ہی اپنے دل میں جھانک کر اور صحیح آچار سنہتا کو بنا کر فلم کے نرماتاؤں کو آگے بڑھنا چاہیئے -[*]

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): महोदया मैं इसमें असोसिएट करना चाहता हूं। यह बहुत ही महवपूर्ण विषय है।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S.B. CHAVAN): Madam, the issue which was raised by my esteemed friend was also brought to may notice. I propose to write to both the State Governments to provide them security so that they should not face any kind of danger to their lives.

RE: EXPLOSIVE SITUATION IN VARANASI

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश): महोदया, उत्तर प्रदेश में एक शहर है, बनारस। उसको काशी भी कहा जाता है। वहां एक काशी विश्वनाथ गली है। काशी विश्वनाथ गली बहुत पतली गली है लेकिन वहां पर एक धार्मिक स्थल है और वह धार्मिक स्थल जो हमारे साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है, उसमें एक धार्मिक स्थल को कहा जाता है, काशी विश्वनाथ मंदिर। यह मंदिर हिन्दू धर्म का प्रतीक है और दूसरा धार्मिक स्थल है, ज्ञानव्यापी मस्जिद, जो इस्लाम धर्म से संबंधित है।

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा: मंदिर तोड़कर बनाया गया है...(**व्यवधान**)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय: आप सुन लीजिए, हमने तो आपका नाम लिया ही नहीं। यह तो

[*]Transliteration in Arabic Script.